Issue-12; Vol.01, Sept. 2021 Impact Factor: 6.003 (I2OR)
ISSN–2231-1130
VEETHIKA

''जनपद अमेठी में परिवहन तन्त्र की स्थिति''
'एक भौगोलिक अध्ययन'

डॉ0 अखिलेश कुमार पाण्डेय
एसो0 प्रो0, भूगोल विभाग
एम0डी0पी0जी0 कॉलेज प्रतापगढ़

सुनील कुमार विश्वकर्मा
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय पट्टी प्रतापगढ़

शोध–सार

समवेत रूप में कह सकते हैं कि परिवहन तन्त्र किसी क्षेत्र के विकास के आधार होते हैं। जिस क्षेत्र का जितना उच्च स्तर का परिवहन तन्त्र होगा वह क्षेत्र उसी रूप में विकसित स्थिति को प्राप्त कर सकेगा। क्योंकि, अमेठी विगत कई दशकों से राजनीतिक दृष्टिकोंण से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है इसलिए इस क्षेत्र में परिवहन के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। कहना अतिसयोक्ति नहीं होगा कि इस जनपद ने देश को प्रधानमन्त्री दिया है इस लिए कई खण्डों में ही सही लेकिन अमेठी में विकास रूपी बूँद की वर्षा सदैव होती रही है। अमेठी जनपद में गांव–गांव में उच्चीकृत सड़कों का जाल बिछा हुआ है। यह जनपद आज शोध का विषय माना जा सकता है। अमेठी के गांवों में विभिन्न प्रकार के लघु एवं कुटीर उद्योग स्थापित किए गये हैं तथा कृषि के दृष्टिकोंण से यह जनपद महत्वपूर्ण है इस लिए भी सड़कों की पर्याप्त मात्रा इस क्षेत्र में विद्यमान है। आज अमेठी सड़क एवं रेलमार्गों द्वारा प्रदेश के विभिन्न शहरों एवं देश के विभिन्न राज्यों के औद्यौगिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

प्रस्तावना

जिस प्रकार मानव शरीर के विकास एवं सुचारु रुप से संचालन के लिए तन्त्रिका तन्त्र महत्वपूर्ण होता है एवं बिना इसके शरीर की कल्पना करना भी असम्भव है, उसी प्रकार किसी क्षेत्र अथवा स्थान के लिए परिवहन तन्त्र का महत्व होता है। प्राचीन काल से परिवहन के मार्गों एवं साधनों पर कार्य किया जा रहा है। सिन्धु घाटी की सभ्यता काल से ही भारत में सड़क निर्माण की सुदीर्घ परम्परा रही है। ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी में मौर्य शासक चन्द्रगुप्त तथा अशोक महान सड़क निर्माता थे। मध्यकालीन भारत में शेरशाह सूरी ने तथा मुगलों ने भी सड़क निर्माण में पर्याप्त रुचि ली। आधुनिक युग में ब्रिटिश शासकों विशेषकर लार्ड डलहौजी द्वारा सड़कों के निर्माण एवं विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। यदि परिवहन मार्गों का विकास न हुआ होता तो विभिन्न देशों की खोज भी न हो पाती। विश्व के विभिन्न यात्री यथा वास्को डी गामा, मार्को पोलो, कोलम्बस, मैगलेन, अमेरिगो वस्पुकी आदि ने अनेक परिवहन मार्गों से विभिन्न देशों की यात्राएं की, हॉलांकि वे परिवहन मार्ग एवं तरीके पुराने थे लेकिन फिर भी महत्वपूर्ण थे। भूगोल के सन्दर्भ में परिवहन एवं परिवहन मार्गों के निम्न तथ्यों का उल्लेख करना आवश्यक है –

''अन्वेषणात्मक समुद्री यात्राओं के लिए 15 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में अनुकूल परिस्थितियां अरब भूगोल के अन्तिम वर्षों (1406 ई0) तक अस्तित्व में आ गई थीं। पुर्तगाली क्रिस्टोफर कोलम्बस की उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका की खोज (1492 ई0) अन्वेषण काल की प्रतिनिधि घटना है तथा वास्को डी गामा द्वारा भारत के समुद्री मार्ग की खोज (1498 ई0) दूसरी बड़ी उपलब्धि थी।''

सन् 1497 में भारत की यात्रा के समय वास्को डी गामा का मार्ग से भटक जाने का परिणाम हुआ कि वह 96 दिनों तक खो गया, तदुपरान्त उसे पुर्तगाल से 4500 मील दूर भूमि के दर्शन हुए जिसे **'केप ऑफ गुड होप'** के नाम से जाना जाता है। आज हम 21 वीं सदी में हैं और अब परिवहन मार्ग एवं परिवहन के साधन बहुत उन्नत दशा में है। किसी देश की परिवहन व्यवस्था सांस्कृतिक ढ़ाँचे (आर्थिक, सामाजिक, एवं आन्तरिक व्यवस्था) रुपी शरीर की स्नायु प्रणाली होती है। यह अनेक रुपों में सहायक होती हैं जैसे–

1. देश के दूरस्थ भागों को जोड़ने में सहायक होती है।

2. मनुष्य एवं पदार्थों तथा उत्पादों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में सहायक होती हैं।
3. औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
4. आपातकालीन परिस्थितियों में रक्षा एवं सहायक सामग्री को पहुंचाने में सहायता करती है।
5. राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को सम्बल प्रदान करती है।

हिन्दी भाषा में 'वाहन' शब्द के साथ 'परि' उपसर्ग के समावेश से तात्पर्य है भार, रथ अथवा किसी गाड़ी को किसी बल के प्रयोग के द्वारा स्थानान्तरित कर देना। आंग्ल भाषा में इसे ट्रांसपोर्ट (Transport) कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'पारगमन'। इस शब्द का प्रयोग प्रायः मनुष्यों, माल एवं वस्तुओं को खींचकर एक स्थान पर ले जाने के लिए किया जाता है। बदलते समय के साथ परिवहन तन्त्र के साधनों में नित नवीन परिवर्तन स्पष्टतः देखे जा सकते हैं। वर्तमान समय में परिवहन तन्त्र में अनेक मार्गों एवं साधनों का प्रयोग किया जा रहा है जैसे – स्थल परिवहन (सड़क, रेलमार्ग), जल परिवहन (समुद्री एवं आन्तरिक जैसे नदी एवं नहरें), एवं वायु परिवहन। भारत में वर्तमान में परिवहन प्रणाली के कुल मार्गों का लगभग 83% सड़कें, 9% रेलें, 6% वायुमार्ग, 2% जलमार्ग हैं। विश्व स्तर पर यदि मूल्यांकन किया जाय तो भारत, यू0एस0ए0 के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सड़क प्रणाली (लगभग 58.7 लाख किमी) वाला देश है। साथ ही रेलमार्ग के दृष्टिकोंण से देखा जाय तो भारत एशिया की सबसे बड़ी रेल प्रणाली एवं विश्व की दूसरी वृहत्तम रेल प्रणाली है। और लगातार हम परिवहन तन्त्र के विकास में प्रयत्नशील हैं। आज पूरे विश्व में सड़क एवं रेलमार्ग का बड़ी तीब्रता के साथ विकास किया जा रहा है। भारत सरकार प्रतिदिन लगभग 2 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण कर रही है। प्रस्तुत शोधपत्र में परिवहन तन्त्र की वास्तविक वस्तुस्थिति के स्पष्टीकरण का पूरा प्रयास किया जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोधपत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. परिवहन तन्त्र का महत्व स्पष्ट करना एवं इसकी उपयोगिता से लोगों को अवगत कराना।
2. जनपद में परिवहन मार्गों का मूल्यांकन करना।
3. जनपद अमेठी में परिवहन के साधनों एवं उनकी गुणवत्ता एवं मात्रा का मूल्यांकन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र के परिवहन तन्त्र को समझना तथा इसमें परिवर्तन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
5. नव निर्मित जनपद में परिवहन मार्गों की सम्भावनाओं की तलाश करना एवं उनको पूरा
6. करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
7. परिवहन तन्त्र किसी क्षेत्र के विकास के विशेष सूचक (Indicators) होत हैं तथा ये किसी क्षेत्र की वास्तविक विकास की स्थिति को स्पष्ट करते हैं। स्पष्ट कहें तो इस जनपद के विकास का जायजा लेना।

अध्ययन क्षेत्र हमेशा से चर्चित क्षेत्र रहा है इस दृष्टिकोंण से देखा जाय तो इस जनपद के विकास कार्यों का मूल्यांकन आवश्यक है। इस जनपद के विकास कार्यों का मूल्यांकन कर उनके अपेक्षित सुधार के उपाय सुझाना एवं योजना प्रस्तुत करना।

विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिनके अन्तर्गत प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थ, विभिन्न प्रकार की पाठ्य पुस्तकें, जनगणना पुस्तिकाओं, परिवहन सांख्यिकी, राज्य सड़क परिवहन निगम पुस्तिका, गजेटियर अन्य शासकीय प्रकाशन आदि हैं। क्षेत्र का स्थलाकृतिक मानचित्र और जिला सांख्यिकीय पत्रिका और जनपद विकास भवन से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग किया जायेगा। इसके अलावा अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली, अनुसूची, ग्राम स्तर से जनपद के लोगों से मिलकर सूचनाएं प्राप्त की गई हैं। कह सकते हैं कि यह शोधपत्र पूर्णतः विश्वस्त सूचनाओं एवं आंकड़ों के संग्रह पर आधारित और संकलित है। इसके आंकड़े विश्वस्त हैं एवं भविष्य में साक्ष्य के रूप में प्रयोग किये जा सकते हैं।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

किसी जनपद के गठन अथवा विघटन के कुछ सामाजिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक कारण होते हैं। जनपद अमेठी का सृजन (उत्तर प्रदेश का 72 वॉ जनपद) भी एक ऐसी ही

राजनीतिक घटना है। इस जनपद का सृजन 1 जुलाई सन् 2010 को छत्रपति शाहूजी महाराज नगर के नाम से उ0 प्र0 की तत्कालीन मुख्यमन्त्री सुश्री मायावती जी द्वारा किया गया। जिसमें सुलतानपुर जनपद की तीन (अमेठी, गौरीगंज, मुसाफिरखाना) एवं रायबरेली जनपद की दो (तिलोई, सलोन) तहसीलों को सम्मिलित किया गया था। पुनः 30 जुलाई 2012 को राज्यपाल महोदय द्वारा जनपद की अधिसूचना को निरस्त करते हुए 'अमेठी' नामक नये जिले का सृजन हुआ जिसका मुख्यालय गौरीगंज निश्चित किया गया। उस समय प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय अखिलेश यादव जी थे। इस समय जनपद में 4 तहसीलें (अमेठी, गौरीगंज, मुसाफिरखाना, तिलोई) तथा 13 विकासखण्ड (अमेठी, गौरीगंज, मुसाफिरखाना, तिलोई, जगदीशपुर, बाजार शुकुल, भेटुआ, भादर, संग्रामपुर, शाहगढ़, जामों, सिंहपुर, बहादुरपुर) तथा 682 ग्राम पंचायतें हैं। इस जनपद की कुल जनसंख्या 1867678 (जनगणना 2011) है जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 1818940 तथा नगरीय जनसंख्या 48738 है। कुल जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या 945235 तथा महिला जनसंख्या 922443 है।

इस जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 2362 वर्ग किमी है तथा अक्षांशीय स्थिति 26 अंश 9 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं देशान्तरीय विस्तार 81 अंश 49 मिनट पूर्वी देशान्तर है। तथा औसत ऊँचाई 101 मीटर (331 फीट) है। इस जनपद का प्रशासनिक सेटअप उच्चस्तरीय है। अमेठी इस जनपद का प्रमुख नगर है जबकि गौरीगंज जनपद मुख्यालय के रूप में जाना जाता है।

धरातलीय बनावट

जनपद अमेठी धरातलीय बनावट के दृष्टिकोंण से समतल क्षेत्र है। उच्चावच के दृष्टिकोंण से अमेठी एक सामान्य क्षेत्र है। यह क्षेत्र उत्तर दिशा में गोमती एवं दक्षिणी दिशा में सई नदी द्वारा सिंचित है। इन नदियों के मध्य में स्थित होने के कारण यह एक उपजाऊ भूभाग है। जनपद का लगभग सम्पूर्ण क्षेत्र समुद्र तल से 94 से 101 मीटर ऊँचाई रखता है। मैदानी भूभाग होने का सकारात्मक लाभ यह है कि यह पर्याप्त उर्वरा शक्ति धारित करता है। परन्तु इसका एक नकारात्मक प्रभाव यह भी है कि यह क्षेत्र परिवहन के लिए उतना अनुकूल नहीं है जितना कि पठारी क्षेत्र। सड़कों और रेलमार्गों के निर्माण एवं टिकाऊपन के लिए धरातल की कठोरता महत्वपूर्ण होती है।

अपवाह

जनपद अमेठी का अपवाह तन्त्र सामान्य है। इस जनपद के उत्तर में जनपद सीमा के पास से गोमती नदी प्रवाहित होती है जो कि जगदीशपुर एवं मुसाफिर खाना तहसील क्षेत्र को सिंचित करती है। जबकि दक्षिणी क्षोर से होकर सई नदी प्रवाहित होती है। हालॉकि ये दोनों नदियां अमेठी जनपद के न्यून क्षेत्र को अधिग्रहीत करती है, लेकिन महत्वपूर्ण है। उपरोक्त के अलावा मालती, मनोरमा, कादूनाला, शारदा सहायक नहर, विकासखण्ड भादर से निकलकर बहने वाली एक स्थानीय नदी एवं छोटे–छोटे नाले एवं अस्थाई तथा मौसमी नदियां इस जनपद के अपवाह तन्त्र का निर्माण करती हैं। जनपद के दक्षिणी भाग में सलोन के पास रायबरेली जनपद में '**समसपुर पक्षी अभ्यारण्य**' स्थित है।

अमेठी जनपद में परिवहन तन्त्र

अध्ययन क्षेत्र एक नवगठित जनपद है जो कि 1 जुलाई 2010 में सुलतानपुर एवं रायबरेली जनपद की कुछ तहसीलों को काटकर बनाया गया है। इसमें तीन तहसीलें सुलतानपुर जनपद (अमेठी, गौरीगंज, एवं मुसाफिरखाना) और एक तहसील रायबरेली जनपद (तिलोई) शामिल हैं। पूर्व में अमेठी सुलतानपुर जनपद की मात्र तहसील जरूर थी परन्तु राजनीतिक दृष्टिकोंण से यह सुलतानपुर से अधिक चर्चित रहती थी। अमेठी एवं गौरीगंज तहसीलों में सुलतानपुर का अधिकतम औद्योगिक संकेन्द्रण हुआ था। जनपद बनने के बाद अमेठी एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में उभर कर आयी। इस जिले में लगभग 48 बृहत् स्तर के औद्योगिक प्रतिष्ठान यथा–भेल (BHEL), इण्डोगल्फ (INDOGULF), सेल (SAIL), एच0ए0एल0 (HALHindustan Aironotics Limited), ए0सी0सी0 सीमेन्ट प्लाण्ट, इण्डियन ऑयल गैस फिलिंग स्टेशन त्रिसुण्डी, ऊषा फैन, फूड पार्क आदि स्थापित हैं, जो कि पहले सुलतानपुर जनपद की सीमा के अन्तर्गत आते थे। इस प्रकार औद्योगिक विकास के कारण यह जनपद परिवहनीय दृष्टि से सम्पन्न रहा है। अमेठी जनपद आज दो प्रमुख परिवहन माध्यमों सड़क एवं रेल (Road and Railways) से सम्पन्न है। अमेठी और गौरीगंज ऐसे रेलवे स्टेशन हैं जहां से होकर गुजरने वाली लगभग सभी ट्रेनें

रूकती हैं। इसके साथ–साथ जगदीशपुर औद्योगिक क्षेत्र के समीप निहालगढ़ रेलवे स्टेशन भी इसी प्रकार का है। समवेत रूप में कहें तो जनपद अमेठी परिवहन तन्त्र के दृष्टिकोंण से सम्पन्न जिला है।

जनपद अमेठी में परिवहन तन्त्र का विकास

सिन्धुघाटी की सभ्यता के समय से ही भारतवर्ष में मार्ग के रूप में सड़कों का प्रयोग होता आया है प्राचीनकाल से लेकर आज तक आवागमन के लिए नित नवीन खोजें होती रही हैं और आज इस क्षेत्र में मानव समुदाय को अपेक्षित सफलता भी प्राप्त हुई है। विगत समय में यहां से श्रीमती इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी ,राहुल गांधी, डॉ संजय सिंह आदि सुप्रसिद्ध नेताओं ने चुनावी समर में भाग लिया है, तात्पर्य यह है कि अमेठी देश के वी वीआईपी क्षेत्रों में से एक रही है और सभी राजनीतिज्ञों ने अमेठी को आगे ले जाने का प्रयास किया है। तथा अपेक्षित विकास विभिन्न विभागों में हुआ भी है, जिसमें परिवहनीय विकास मुख्य है। अमेठी के परिवहन तन्त्र को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है–

सड़क परिवहन जनपद अमेठी में पक्की सड़कों की लम्बाई (किमी में)

क्रम सं	मद	2011–12	2018–19	वृद्धि (किमी में)
1	लोक निर्माण विभाग के अन्तर्गत			
1.1	राष्ट्रीय राजमार्ग	74	118	44
1.2	प्रादेशिक राजमार्ग	139	00	निल
1.3	मुख्य जिला सड़कें	65	31	निल
1.4	अन्य जिला तथा ग्रामीण सड़कें	2625	2775	150
2	स्थानीय निकायों के अन्तर्गत			
2.1	जिला पंचायत	190	371	181
2.2	नगर निगम/नगर पालिका परिषद	45	133	88
3	अन्य विभाग के अन्तर्गत			
3.1	सिंचाई विभाग	06	47	41
3.2	गन्ना विभाग	08	00	निल
3.3	वन विभाग	06	03	निल
3.4	डी0जी0वी0आर0	00	00	निल
3.5	अन्य विभाग	126	126	निल
योग		3284	3747	

स्रोत–जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2014–15 एवं 2018–19 द्वारा

1–जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी अमेठी
2–अधिशाषी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग प्रा0ख0 अमेठी।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 2011–12 में सड़कों की कुल लम्बाई 3284 किमी थी जो कि 2018–19 में बढ़कर 3747 किमी हो गई। इस प्रकार उपरोक्त वर्षों में 463 किमी नई सड़कों का निर्माण किया गया। हालॉकि सम्पूर्ण योग में वृद्धि हुई लेकिन विभिन्न सरकारों द्वारा सड़कों के विकास को लेकर किये गये प्रयास के अनुरूप जनपद अमेठी में सड़कों के अपेक्षित विकास में सफलता प्राप्त न हो सकी।

जनपद अमेठी में प्रमुख सड़क मार्ग

मार्ग का प्रकार	ज0 में प्रवेश	ज0 से निकास	ज0 में कुल ल0	प्रमुख केन्द्र
एन0एच0 731	अलीगंज के पास	चौबीसीके पास	52	मुसाफिरखाना,जगदीशपुर, भेल, सेल, इन्हौना
एन0एच0 128	धम्मौर	फुर्सतगंज	59.7	मुंशीगंज, एच0ए0एल0,गौरीगंज, जायस, फुर्सतगंज
एन0एच0 931 एन0एच0 931ए	बाबूगंज केपास लोहिया नगर	मुसाफिरखाना	63	अन्तू,अमेठी,गौरीगंज,नंद मोहर, मुसाफिरखाना
एन0एच0 330	दुर्गापुर बाजार	खुण्डौर	18	दुर्गापुर, रामगंज, कोहडौर
अन्य प्रमुख मार्ग	अमेठी	जगदीशपुर	45.9	अमेठी, गौरीगंज, जामों, जगदीशपुर
	अमेठी	सुलतानपुर धम्मौर	20	अमेठी, धम्मौर
	अमेठी	दुर्गापुर	28	अमेठी, टीकरमाफी, भादर, दुर्गापुर
	गौरीगंज	अठेहा	15	गौरीगंज, अठेहा
	अमेठी	घुंइसरनाथ	22	अमेठी, घुंइसरनाथ

संकेत–ज0 का अर्थ जनपद।

स्रोतः एन आई सी मानचित्र अमेठी गूगल मानचित्र

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि जनपद में चार प्रमुख राजमार्ग है जबकि अन्य छोटे प्रमुख

एवं गौण सड़क मार्ग है। जनपद के राष्ट्रीय राजमार्ग अमेठी के औद्योगिक केन्द्रों को उत्तर प्रदेश के अन्य प्रमुख नगरों से सीधे जोड़ती है। यही सड़क मार्ग हैं जो लगभग तीन लाख जनसंख्या को आवागमन की सुविधाएं प्रदान करते हैं। उपरोक्त में सबसे प्रमुख मार्ग, राष्ट्रीय राजमार्ग 731 है। जनपद में सैकड़ों किमी सड़कें प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना से बनी हैं जो कि ग्रामीणांचल में रहने वाले लोगों को बेहतर आवागमन की सुविधाएं प्रदान करती हैं। जनपद में राजमार्गों एवं ग्रामीण सड़कों के अतिरिक्त अन्य प्रमुख सम्पर्क मार्ग हैं जो कि अमेठी को लखनऊ, वाराणसी, फैजाबाद, प्रयागराज, रायबरेली आदि प्रमुख शहरों को आसानी से जोड़ते हैं।

रेल परिवहन

रेल परिवहन आज विश्व में विकास के संकेतक के रूप में अभिहीत किया जाता है। भारत में पहली रेलगाड़ी अप्रैल 16, 1853 को मुम्बई से थाणे के बीच चलाई गई थी। तब से लेकर वर्तमान तक भारतीय रेल ने अप्रतिम वृद्धि का प्रदर्शन किया है। भारत इस समय विश्व का तीसरा सबसे बड़ा रेल तन्त्र धारित करता है। (4 WDI 2019)। जनपद अमेठी में ब्राड गेज एवं नैरो गेज दोनों प्रकार की रेलवे लाइनों का विस्तार है। इस जनपद में दो प्रमुख रेलमार्गों की सहभागिता है। इसके उत्तरी भाग में वाराणसी –लखनऊ रेलमार्ग एवं दक्षिण में वराणसी–लखनऊ मार्ग वाया भदोही प्रतापगढ़ हैं। जनपद अमेठी के रेल परिवहन का विवरण अग्रलिखित है–

01–वाराणसी–लखनऊ रेलमार्ग वाया अमेठी

यह रेलमार्ग उत्तर रेलवे मण्डल (Zone) के अन्तर्गत आता है जो कि वाराणसी को लखनऊ से जोड़ता है। यह मार्ग वाराणसी से भदोही, जंघई, बादशाहपुर, प्रतापगढ़, अमेठी, गौरीगंज, जायस, रायबरेली, होते हुए लखनऊ पहुँचता है। यह मार्ग अन्तू से अमेठी में प्रवेश करता है तथा जायस के पास फुर्सतगंज से रायबरेली जनपद में प्रवेश करता है। अमेठी में इस मार्ग की कुल लम्बाई लगभग 56 किमी है। इस बीच दो हाल्ट सहित कुल लगभग 8 रेलवे स्टेशन (सहजीपुर, मिस्रौली, अमेठी, ताला खजुरी, गौरीगंज, बनी, कासिमपुर, जायस) स्थित हैं। यह मार्ग स्थानीय स्तर पर जनपद की आधी से अधिक आवादी को परिवहन सेवा प्रदान करता है।

02–वाराणसी लखनऊ रेलमार्ग वाया निहालगढ़

यह रेलमार्ग उत्तर रेलवे मण्डल (Zone) के अन्तर्गत आता है जो कि वाराणसी को लखनऊ से जोड़ता है। यह मार्ग वाराणसी से जौनपुर, लम्भुआ, सुलतानपुर, निहालगढ़, हैदरगढ़ होते हुए लखनऊ को जाता है। यह मार्ग मुसाफिरखाना के समीप शिवनगर से अमेठी में प्रवेश करता है तथा लगभग 56 किमी दूरी तय करने के पश्चात चौबीसी के पास से लखनऊ क्षेत्र में प्रवेश करता है। इस मार्ग पर जनपद अमेठी में एक हाल्ट सहित कुल लगभग 8 रेलवे स्टेशन (शिवनगर, मुसाफिरखाना, अढ़नपुर, वारिसगंज, निहालगढ़, सिन्दूरवा, अकबरगंज, चौबीसी) हैं। यह मार्ग अमेठी को सीधे मुम्बई, गुजरात, दिल्ली, जम्मू आदि प्रदेशों से जोड़ता है। यह मार्ग भी स्थानीय स्तर पर जनपद की आधी से अधिक आवादी को परिवहन सेवा प्रदान करता है।

उपरोक्त दोनों रेलमार्गों से होकर लगभग 56 ट्रेनें गुजरती हैं जो कि अमेठी के लोगों को भारत के विभिन्न भागों जम्मू से कन्याकुमारी एवं असम से लेकर मुम्बई, गुजरात तक के लोगों को रेल परिवहन की सुविधा प्रदान करती है।

वायु परिवहन

वायु परिवहन यातायात के साधनों में सर्वाधिक आधुनिक व तीव्रगामी साधन है। देश में इस परिवहन के साधन का विकास 1911 ई में प्रारम्भ हुआ। जनपद अमेठी मे तो एक ऐसा औद्योगिक प्रतिष्ठान है जहां पर वायुयानों के चिप तैयार किये जाते हैं। इसे एच0 ए0 एल0 (HAL Hidustan Aironotics Limited) के नाम से जानते हैं। इस क्षेत्र में कोई अन्तर्राष्ट्रीय एयर पोर्ट नही है लेकिन जनपद में मुख्यालय से 35 किमी की दूरी पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय उड्डयन अकादमी स्थित है जिसकी सिथिति फुर्सतगंज, (तहसील तिलोई) में है जो कि वायु परिवहन केन्द्र का काम करती है।

सन्दर्भ सूची

1. वैकल्पिक भूगोल, संजय कुमार सिंह क्रॉनिकल पब्लिकेशन प्रा0 लि0 का पुस्तक प्रभाग सोलहवां संस्करण , ए–27डी, नोएडा–201301।
2. भौगोलिक चिंतन का इतिहास, माजिद हुसैन, रावत पब्लिकेशन सत्यम अपार्टमेंट सेक्टर 3 जवाहर नगर जयपुर 302004 (पृष्ठ सं 115 पैरा 3)।

3. भारत का भूगोल, एस के ओझा एवं अर्चना ओझा बौद्धिक प्रकाशन बी 4 ए0 श्रीराम भवन देवनगर, झूंसी प्रयागराज। पन्द्रहवां संस्करण (पृष्ठ सं 286 पैरा 1)।
4. मोकुआ रिचर्ड ओगोती शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड क्षेत्र में परिवहन तन्त्र का प्रादेशिक विकास पर प्रभाव का एक भौगोलिका विश्लेषण (चैप्टर 1 प्रस्तावना)।
5. Government of India Ministry of MSME District Industrial Profile of Amethi District MSME Development Institute -Allahabad (page 2)
6. जिला आपदा प्रबन्धन योजना अमेठी 2017–18 प्रकाशन,–जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण जिल प्रशासन अमेठी (पृष्ठ 12)।
7. जिला सांख्यिकीय पत्रिका अमेठी 2014।
8. जिला सांख्यिकीय पत्रिका अमेठी 2018।